ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

आम तेम भटकतां चरणोने मंझिलनुं ठेकाणुं मळे तो भयो भयो..... !

डॉ. पूजा तन्ना
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.

शब्द अने स्वरना सर्जन-संयोजनमां कोइ गेबी प्रेरणा के परमतत्त्वनो अणसार मळे तो अे शब्द अने संगीतनी अनुभूति कंइक विशिष्ट अने अलौकिक ज होय. आपणी गुजराती कवितामां तो नरसिंह महेताथी प्रारंभीने आज सुधीना सर्जकोना सर्जनोमां आ परमतत्त्वनी वात भिन्न-भिन्न स्वरुपे पडघाती आवी छे. अर्वाचीन कविताओमां पण आ भगवद्भाव संवेदन घणा कविओमां आपणने अनुभवाय छे. मकरंद दवे, सुंदरम्, हरीन्द्र दवे, राजेन्द्र शुकल अने अन्य घणा. सुंदरम् उत्तर जीवन ज पछी तो श्री अरविंद अने श्री माताजी पोंडीचेरीना सान्निध्यमां ज पसार थयुं अे वात सौ कोइ जाणे छे.

हरीन्द्र दवेनी कवितामां आम तो मुख्यत्वे कृष्ण-राधा पडघाय छे, लहेराय छे. पण आजनी पेढीना भावकोने अे ओछी खबर हशे के हरीन्द्र दवेना आंतरमन-हृदयमां सहजानंद स्वामीनो भगवो रंग घुंटायो छे. स्वामीनारायण (मूळ) संप्रदायना केटलाय संत-भकत-कविओनी भकितधारानो शब्दरंग हरीन्द्र दवेअे झील्यो छे. सहजानंद स्वामीनी परंपराना घणाय संतोनी भकितछायानो आ कविने संस्पर्श थयो छे 'गुणातीत पदो' अे श्रेणीना चार पदोमां आ भकितभाव हरीन्द्रभाइअे अध्यात्मपूर्वक प्रगटाव्यो छे अेमांय चोथुं पद 'हुं तो स्वामी बोलुं ने तमे सांभरो छो' अे पदमां तो आपणो लोकगीतनो लय-ढाळ 'हुं तो ढोले रमुं ने हरि सांभरे रे' केवा आबाद रीते झिलायो छे. गढपुर-जूनागढना मंदिरोना स्थान संदर्भो पण आ पदमां उल्लेखाया छे तो 'संत मरूया पछी सगपण छूटयां, तंत तूटया बहु खांत रे' अे गीतमां कविनो आ सहजानंद स्वामीनो स्वामिनारायणी रंग अनुभवाय छे. हरीन्द्र दवेनी घणीय रचनाओमां अेना भावजगतमां आ भगवो रंग आत्म ओळखना स्तरे विस्तर्यो छे. जो के सुंदरम्नी माफक आ कवि पछीनी मात्र आध्यात्मक मार्गी ज नथी बनी रहेता.

संगीतज्ञ-स्वरकार-गायक दिलीप धोळकीयाना नामथी भाग्ये ज कोइ गुजराती जण अजाण हशे. योगानुयोग अे रहयो के दिलीप धोळकीया पण स्वामीनारायण संप्रदाय अने सहजानंद स्वामी महाराजना रंगमां रंगायेला छे. वर्षो सुधी अने हजु आजे पण आ संप्रदायना पद-भजन-कीर्तनो वगेरेनुं संगीतकर्म-स्वर नियोजनकर्म वगेरे बधुं ज दिलीप धोळकिया संभाळी रहया छे. 'तारी आंखनो अफीणी' अे वेणीभाइ पुरोहितनी रचना कयो गुजराती भावक भूली शके ?! अेनुं स्वरांकन तो आज पण सौने डोलावी दे छे कोइअे अेक वखत दिलीपभाइने पूछेलुं के 'तारी आंखनो अफीणी' अे गीतनुं स्वरांकन कर्युं त्यारे तमारा चित्तमां कयो भाव हतो ? तरत ज आ संगीतकारे कहयुं 'आ गीतना कम्पोझीशन (स्वरांकन) वखते मारा चित्तमां-हृदयमां श्री सहजानंद स्वामी महाराजनी

मूर्ति ज झळकती हती !' जो के अे वात जुदी छे के जूनी गुजराती ब्लेक अेन्ड व्हाइट फिल्म 'दीवादांडी'मां आ गीतनुं फिल्मांकन (पीकचराइझेशन) जुदी ज अनुभूति करावे छे.

कवि अने स्वरकार-गायक बन्नेना ऊर्मितंत्रमां अेक ज भावसंवेदन झीलायुं होय अने पछी भावको समक्ष अे पहोंच्युं होय त्यारे ज आवी अेक सुंदर शब्द स्वरचनानी घटना घटे छे. हरीन्द्र दवेनुं अे सहजानंदीय रंगवाळुं अने स्वरकार दिलीप धोळीकयानुं तो आ भगवद्भावने पूर्ण समर्पित अेवुं स्वरांकन, जे खुद दिलीप धोळकियाअे ज गायेलुं छे ते असल 'वर्जन' मारा स्वरांकन संग्रहालयमां सचवायेलुं छे. अेटलुं ज नहीं परंतु खुद कवि हरीन्द्रभाइना अवाजमां पठन थयेलुं आ गीत पण मारा 'रेर कलेकशन' विभागमां शोभे छे हवे के, भावक ! वातमां वधु मोण नाख्या वगर अे गीत तमारी सन्मुख प्रस्तुत करी ज दउं ! खरुंने ? तो ल्यो, तमारा नयनो बंध करीने सांभळो अे गीत :

तारी ऊतरेली पाघ मने आप मारा स्वामी,
मने भगवा ते रंग तणा ओरता,
मारा मृगजळना भाग्यथी छोडाव मारा स्वामी,
मने भगवा ते रंग तणा ओरता.
कहे तो हुं वीजनो झबकार थाय अेटलामां,
छोडी दउं दोर ने दमाम,
वेण तारुं राखवा हुं राजपंथ छोडीने,
कांटाळी केडी लहुं आम,
थाळी लइ रामपातर आप मारा स्वामी,
मने भगवा ते रंग तणा ओरता.
फूल फूल भमती आ आंखोन अेक वार,
ओखाय तारुं पारिजात,
ठेर ठेर, भमतां आचरणोने कयांक जइ,
पहोंचवानुं ठेकाणुं आप,
भवनां जाळांने हवे तोड मारा स्वामी,
मने भगवा ते रंग तणा ओरता.

१९८७ मां लखायेलुं अने कदाच अे ज अथवा अे पछीना वर्षोमां थयेलुं आ स्वरांकन आजे तो कोण सांभळे ?! 'वीजनो झबकार' अे पंकितमां गंगासती अने पानबाइनो संदर्भ आपणने सहज सांभरी आवे. तो थाळी लइने रामपातर जेवुं पर्णनुं पात्र मांगीने कवि भौतिकता अने आध्यात्मिकतानी वात केवी तो प्रतीकात्मक रीते हळवेथी कही दे छे ! आवा सुंदर भावगीतने स्वरदेह आपीने खूब भकितभावभर्या कंठे रजू करता मुरब्बी-वडील दिलीपभाइ धोळीकयाने हृदयपूर्वक भाववंदन अने कवि हरीन्द्रभाइने मौन शब्दवंदन....

डॉ. पूजा तन्ना
एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.